मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय : जैनविद्या एवं प्राकृत

(Based on National Education Policy 2020)

संकाय – मानविकी

(2023 – 2024)

सेमेस्टर प्रणाली

Level	Sem	Course Type	Course Code	Course Title	Delivery Type			Total Hours	Credit	Internal Assessment	EoS Exam	M. M.	Remarks
					Lecture	Fomative &Diagnostic assement	Tutorial						
8	I	DCC	PKT8000T	प्राकृत भाषा-साहित्य की परम्परा व इतिहास	L	FDA	T	60	4	20	80	100	
			PKT8001T	अर्द्धमागधी एवं प्राकृत कवि	L	FDA	T	60	4	20	80	100	
			PKT8002T	शौरसेनी प्राकृत	L	FDA	T	60	4	20	80	100	
			PKT8003T	कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा	L	FDA	T	60	4	20	80	100	
			PKT8004T	प्रकरण एवं पालि	-	FDA	-	60	4	20	80	100	
			PKT8005T	जैनधर्म, दर्शन एवं महात्मा गांधी	-	FDA	-	60	4	20	80	100	
	II	DCC	PKT8006T	कथा साहित्य एवं प्राकृत व्याकरण	L	FDA	T	60	4	20	80	100	
			PKT8007T	सट्टक साहित्य एवं मागधी सूत्र	L	FDA	T	60	4	20	80	100	
			PKT8008T	अर्द्धमागधी प्राकृत एवं अपभ्रंश कवि	L	FDA	T	60	4	20	80	100	
			PKT8009T	महाराष्ट्री प्राकृत	L	FDA	T	60	4	20	80	100	
			PKT8010T	जैनविद्या के वैशिष्ट्य के विविध आयाम	L	FDA	T	60	2	20	80	100	
		GEC	PKT8100T	भारतीय संस्कृति ,समाज एवं कला	L	FDA	T	60	4	20	80	100	

			PKT8101T	बुद्ध एवं जैनकालीन परिस्थिति, समाज एवं कला										
9	III	DCC	PKT9011T	पाण्डुलिपि सम्पादन	L	FDA	T		60	4	20	80	100	
			PKT9012T	प्राकृत व्याकरण एवं अपभ्रंश भाषा	L	FDA	T		60	2	20	80	100	
		DSE	PKT9102T	जैन आगम, ध्यान एवं योग	L	FDA	T		60	4	20	80	100	
			PKT9103T	जैन योग एवं स्वास्थ्य विज्ञान		FDA								
			PKT9104T	जैन सिद्धान्त एवं दर्शन	L	FDA	T		60	4	20	80	100	
			PKT9105	प्राकृत काव्य साहित्य-मीमांसा		FDA								
			PKT9106T	जैन धर्म, समाज एवं संस्कृति	L	FDA	T		60	4	20	80	100	
			PKT9107T	जैनाचार का समाजशास्त्रीय अध्ययन		FDA								
		GEC	PKT9108T	प्राकृत आगम साहित्य - अर्द्धमागधी आगम	L	FDA	T		60	4	20	80	100	
			PKT9109T	सर्वेक्षण एवं रिपोर्ट राइटिंग - प्रोजेक्ट वर्क		FDA								
	IV	DCC	PKT9013T	प्राकृत शिलालेख एवं छंद	L		T		60	4	20	80	100	
		DSE	PKT9110T	प्राकृत भाषा विज्ञान	L		T		60	4	20	80	100	
			PKT9111T	???										
		DSE	PKT9112T	जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य	L		T		60	4	20	80	100	
			PKT9113T	पाण्डुलिपि सर्वेक्षण एवं सम्पादन										

	DSE	PKT9114T	जैन धर्म: स्वरूप एवं परम्परा	L		T		60	4	20	80	100	
		PKT9115T	प्राकृत आगम साहित्य - शौरसेनी आगम										
	DSE	PKT9116T	जैन कला एवं स्थापत्य	L		T		60	4	20	80	100	
		PKT9117T	प्राकृत काव्य साहित्य की विविध विधाएँ										
	DSE	PKT9118T	प्राकृत के प्रमुख रचनाकारों पर प्रोजेक्ट वर्क	L		T		60	4	20	80	100	
		PKT9119T	लघु शोध प्रबन्ध										

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8000T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परंपरा एवं इतिहास
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा के सामान्य अर्थ, प्राचीनता तथा वैदिक एवं आधुनिक भाषाओं के अन्तःसम्बन्ध को जान सकेंगे। इसके अतिरिक्त प्राकृत के रूपगठन और व्याकरण का ज्ञान विद्यार्थियों को कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी प्राकृत भाषा एवं साहित्य की प्राचीनता, इतिहास और विकास का अनुशीलन कर सकेंगे। 2. विद्यार्थियों में प्राचीन भाषाओं का ज्ञान विकसित होगा। 3. विद्यार्थी ज्ञान विज्ञान के प्राचीन स्रोतों की तरफ उन्मुख हो सकेंगे। 4. विद्यार्थियों में प्राकृत भाषा की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम	
इकाई - I	प्राकृत भाषा का सामान्य परिचय, महत्ता एवं उसकी प्राचीनता के संदर्भ
इकाई - II	भारतीय भाषाएँ वैदिक एवं आधुनिक और प्राकृत का अन्तःसम्बन्ध एवं वैशिष्ट्य, प्राकृत भाषा के विभिन्न रूपों के रूपगठन के नियम एवं वैशिष्ट्य
इकाई - III	प्राकृत भाषा के भेद-प्रभेद, प्राकृत साहित्य की विविधता का परिचयात्मक विश्लेषण, प्राकृत शिलालेखों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा-स्वरूप एवं वैशिष्ट्य
इकाई - IV	साहित्य का सर्वेक्षण: आगमिक परिचय, वाचनाएँ, आगमिक व्याख्या साहित्य- अर्द्धमागधी एवं शौरसेनी आगमिक व्याख्या ग्रन्थ
इकाई - V	प्राकृत रचनानुवाद एवं अभ्यास: कारक/ विभक्ति रचना (संज्ञा एवं सर्वनाम प्रयोग), क्रियारूप एवं कृदन्त के प्रयोग-रचना एवं अभ्यास
सहायक पुस्तकें	1. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग 1 – पं. बेचरदास दोशी, पार्श्वनाथ विद्याआश्रम शोध संस्थान, वाराणसी- 1989 2. जैन आगम साहित्य: मनन और मीमांसा - आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री, श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर – 2012 3. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी - डॉ. ए. एम. घाटगे, स्कूल एंड कॉलेज बुक स्टाल, कोल्हापुर - 1981 4. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण - डॉ. आर. पिशेल (हिंदी संस्करण) बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना – 1958 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी- 2014 6. प्राकृत भाषा से अनुप्राणित भारतीय भाषाएँ – संपादन - डॉ. ज्योतिबाबू जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली - 2022 7. प्राकृत स्वंय शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 8. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर 2000 9. जैन धर्म - आचार्य सुशील मुनि, आचार्य सुशील प्रकाशन, नई दिल्ली -

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8001T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II
पाठ्यक्रम का नाम	अर्धमागधी एवं प्राकृत कवि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा जैनाचार और आगम साहित्य की सामान्य जानकार अर्थ। प्राचीनता तथा वैदिक एवं आधुनिक भाषाओं के अन्तःसम्बन्ध को जान सकेंगे। इसके अतिरिक्त अर्धमागधी-प्राकृत के रूपगठन और व्याकरण का ज्ञान विद्यार्थियों को कराया जायेगा। इसके साथ-साथ प्रमुख जैन आगम एवं आगमेतर आचार्यों/प्राकृत रचनाकारों के जीवन-परिचय से अवगत कराया जायेगा। इस तरह प्राकृत व्याकरण के अभ्यास के माध्यम से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी अर्धमागधी प्राकृत भाषा एवं इस भाषा में रचित आगमों का अध्ययन कर पाएंगे। 2. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे। 3. विद्यार्थियों में अर्धमागधी प्राकृत भाषा की समझ विकसित होगी। 4. प्राकृत काव्य परंपरा एवं उसके रचनाकारों का ज्ञान हो सकेगा।

पाठ्यक्रम	
इकाई - I	आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुत स्कन्ध) प्रथम अध्ययन, सत्थपरिण्णा का अर्थ एवं समीक्षा
इकाई - II	आचारांग सूत्र - द्वितीय अध्ययन लोकविजय का अर्थ एवं समीक्षा
इकाई - III	णायधम्मकहा - पांचवां थावच्चापुत्त अध्ययन एवं सातवां रोहिणी अध्ययन
इकाई - IV	प्राकृत आगम प्राकृत के प्रमुख कवि: महाकवि हाल, विमलसूरि, संघदासगणि, शिवार्य, आचार्य जिनदत्तसूरि, नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, देवेन्द्रगणि
इकाई - V	अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन, संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1961 2. जैन आगम साहित्य: मनन और मीमांसा - आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री, श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर – 2012 3. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी - डॉ. ए. एम. घाटगे, स्कूल एंड कॉलेज बुक स्टाल, कोल्हापुर - 1981 4. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण - डॉ. आर. पिशेल (हिंदी संस्करण) बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना – 1958 5. आगम युग का जैन दर्शन - पं. दलसुख मालवणिया, प्राकृत भारती, 1990 6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 7. आयारो - जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज.) 8. आचारांग सूत्र: यु. मधुकर मुनि, ब्यावर 9. ज्ञाताधर्म कथा: यु. मधुकर मुनि, ब्यावर

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8002T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III
पाठ्यक्रम का नाम	शौरसैनी प्राकृत
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को जैन तत्त्वविद्या, द्रव्यमीमांसा, इन्द्रिय-कषाय-विजय तथा सप्तव्यसन त्याग का अध्ययन शौरसेनी ग्रन्थों को आधार बनाकर कराया जायेगा। शौरसेनी आगम साहित्य की परम्परा का ज्ञान और उसके व्याकरण के नियमों का सोदाहरण प्रयोग इस पत्र के माध्यम से हो सकेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी शौरसैनी प्राकृत भाषा एवं इस भाषा में रचित आगमों का अध्ययन कर पाएंगे। 2. शौरसैनी प्राकृत साहित्य की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे। 3. विद्यार्थियों में शौरसैनी प्राकृत भाषा की समझ विकसित होगी। 4. शौरसैनी प्राकृत में रचित गाथाबद्ध काव्यग्रंथों से प्राचीन काव्य परंपरा का ज्ञान प्राप्त होगा।

पाठ्यक्रम	
इकाई - I	प्रवचनसार (ज्ञानाधिकार) - आचार्य कुन्दकुन्द गाथा - 1-92, अनुवाद एवं समीक्षा
इकाई - II	द्रव्यसंग्रह (नेमिचन्द्राचार्य) - व्याख्या एवं समीक्षा
इकाई - III	भगवती आराधना - शिवार्य 1354 से 1433 गाथाएँ
इकाई - IV	शौरसेनी आगम साहित्य का सर्वेक्षण
इकाई - V	शौरसेनी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन (अभिनव प्राकृत व्याकरण अध्ययन 10, पृ. 383-99 तक)
सहायक पुस्तकें	1. प्रवचनसार, सम्पा. ए.एन.उपाध्ये (भूमिका), श्री परमश्रुत प्रभावक मंडल, अगास – 2012 2. द्रव्यसंग्रह - नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, 2008 3. भगवती आराधना (भावार्थ) भाग 2, संपादन - पं. के.सी. शास्त्री, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर – 1978 4. भगवान महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग-2, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, आ. शान्तिसागर छाणी ग्रंथमाला, बुढाना, मुज्जफरनगर – 1992 5. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर - 2017 6. शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण - डॉ. प्रेम सुमन जैन, भारतीय विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली- 2001 7. जैन संस्कृति कोश - डॉ.भागचन्द जैन, भाग 1 से 3, सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर 2002 8. शौरसेनी प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदय चन्द जैन, आगम अहिंसा शोध संस्थान, उदयपुर 9. शौरसेनी प्राकृत भाषा साहित्य का संक्षिप्त इतिहास - प्रो.राजा राम जैन,

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8003T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV
पाठ्यक्रम का नाम	प्रकरण एवं पालि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को प्राकृत नाट्यशास्त्र का अध्ययन प्रकरण ग्रन्थ मृच्छकटिकम् के आधार पर कराया जायेगा। मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त विभिन्न प्राकृतों के ज्ञान से विद्यार्थी लाभान्वित हो सकेंगे। पालि साहित्य और भाषा की सामान्य जानकारी के साथ-साथ बौद्ध त्रिपिटक के ग्रन्थ धम्मपद के द्वारा अहिंसा अप्रमाद जैसे मूल्यों का अध्ययन इस पत्र के माध्यम से हो सकेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी भारतीय नाट्य परम्परा और मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त बहुविध प्राकृत भाषाओँ का ज्ञान प्राप्त करेंगे। 2. विद्यार्थियों में मृच्छकटिकम् के अध्ययन से लोगों के सामान्य जीवन में प्रयोग किये जाने वाली जनभाषा प्राकृत की समझ विकसित होगी। 3. पालि साहित्य और भाषा की सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे। 4. धम्मपद के अध्ययन से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रति समझ बढ़ेगी।

पाठ्यक्रम	
इकाई - I	मृच्छकटिक - महाकवि शूद्रक अंक 1, 2, 6 एवं 8वां (प्राकृत अंश मात्र गद्य एवं पद्य)
इकाई - II	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र-चित्रण
इकाई - III	धम्मपद (प्रथम यमक एवं द्वितीय अप्पमाद वग्ग)
इकाई - IV	पालि भाषा एवं साहित्य का परिचय
इकाई - V	पठित ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन (मृच्छकटिक एवं धम्मपद)
सहायक पुस्तकें	1. महाकवि शूद्रक - डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1967 2. धम्मपद - डा. सत्य प्रकाश शर्मा, प्रकाशक साहित्य भण्डार, मेरठ – 2012 3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी 2014 4. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1961 5. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा - डा. तारा डागा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर इन्ट्रोडक्शन, 6. मृच्छकटिक एक आलोचनात्मक अध्ययन - डॉ. सुषमा, इंडो विजन प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद - 1985 7. पालि साहित्य का इतिहास - भरत सिंह उपाध्याय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग – 2008 8. स्टडी ऑफ मृच्छकटिकम् - डॉ. जी. वी. देवस्थली, 9. शूद्रक का मृच्छकटिक - डॉ. विश्वनाथ शर्मा

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8004T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V
पाठ्यक्रम का नाम	कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत कथा साहित्य की अतिसमृद्ध परम्परा है। इसमें लगभग चौथी-पाँचवीं शताब्दी से कथाएँ प्राकृत में लिखी जाती रहीं। कुवलयमालाकथा तथा वज्जालग्गं ग्रन्थ प्राकृत चम्पू एवं मुक्तक काव्यसाहित्य के प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं जिनका अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। काव्य के दोनों परम्पराओं के इन ग्रन्थों में विद्यमान विभिन्न मूल्यों का विश्लेषण कराया जायेगा। इसके साथ-साथ प्राकृत वाक्य रचना के नियमों और अभ्यास की जानकारी विद्यार्थियों को दी जायेगी।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी कथाकाव्य ग्रंथों में प्रयुक्त महाराष्ट्री प्राकृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करेंगे। 2. कुवलयमाला के चम्पूकाव्यत्व का अधिगम करेंगे। 3. वज्जालग्गं के अध्ययन से जीवन मूल्यों की समझ विकसित होगी। 4. प्राकृत से मातृभाषा और मातृभाषा से प्राकृत में वाक्यों की संरचना का ज्ञान प्राप्त करेंगे। 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम	
इकाई - I	कुवलयमाला (उद्योतनसूरि) अनुच्छेद 1-12 तक
इकाई - II	वज्जालग्गं की 20 गाथाओं का व्याकरणात्मक मूल्यांकन एवं अनुवाद, सम्पा. वज्जालग्गं में जीवन मूल्य - डॉ.के.सी.सोगानी, गाथा 1-20
इकाई - III	पठित ग्रन्थों का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन
इकाई - IV	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ.के.सी.सोगानी) के पाठ 1 से 41 तक का अभ्यास, आठ वाक्यों का प्राकृत से हिन्दी में अनुवाद पूछना
इकाई - V	प्राकृत की परम्परा का परिचय (प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान)
सहायक पुस्तकें	1. कुवलयमाला भाग-2, सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये, भारतीय विद्या भवन, मुंबई – 1970 2. कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन - प्रो. डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, बिहार 1975 3. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर 2000 4. जैन धर्म - आचार्य सुशील मुनि, आचार्य सुशील प्रकाशन, नई दिल्ली 5. प्राकृत स्वंय शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 6. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के. सी. सोगानी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर 2000

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत प्रथम सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8005T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI
पाठ्यक्रम का नाम	जैनधर्म दर्शन एवं महात्मा गाँधी
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत साहित्य में जैनधर्म-दर्शन का विवेचन सर्वत्र किया गया है। अहिंसा समता की अवधारणा का सामाजिक पक्ष और श्रमणधर्म की चर्या का विवेचन इस पत्र में किया गया है विद्यार्थी जैनधर्म के आलोक में इनका अध्ययन कर सकेंगे। अनेकान्त जैनदर्शन का प्राण है जो वस्तुस्वरूप का सम्यक् विश्लेषण कराना सिखाता है। इससे भी विद्यार्थी लाभान्वित होगें। गाँधी-चिन्तन के अन्तर्गत उनके जीवनदर्शन, ईश्वरवादी चिन्तन सत्य की मीमांसा और उनके सामाजिक सरोकारों का अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी जैनधर्म के प्रमुख सिद्धांत अनेकांतवाद, समता एवं अहिंसा की समझ विकसित होगी। 2. गाँधी-चिन्तन के अन्तर्गत उनके जीवनदर्शन का अध्ययन कर महात्मा गांधी के अवदान को जान पाएंगे।डी गाँधी के ईश्वरवादी चिन्तन, सत्य की मीमांसा और उनके सामाजिक सरोकारों को जान पाएंगे।

पाठ्यक्रम	
इकाई - I	जैन धर्म, दर्शन का परिचय एवं विश्लेषण - अहिंसा, पंच महाव्रत, अनेकान्तवाद, समता एवं उसका स्वरूप
इकाई - II	महात्मा गाँधी का जीवन परिचय
इकाई - III	गांधीवादी विचार - ईश्वर, सत्य, अहिंसा, पर्यावरण विज्ञान
इकाई - IV	महात्मा गांधी पर जैन धर्म का प्रभाव
इकाई - V	महात्मा गांधी के विचारों का भारतीय समाज पर प्रभाव
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, जीवराज जैन ग्रंथमाला, सोलापुर – 1963 2. जैन धर्म - आ. सुशील मुनि, आचार्य सुशील प्रकाशन, नई दिल्ली 3. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल 1975 4. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो. प्रेम सुमन जैन, साहित्य निकेतन, जयपुर - 2022 5. गांधी और मानवता का भविष्य - प्रो. रामजी सिंह, मानक प्रकाशन 1997 6. गांधी दृष्टि - प्रो. रामजी सिंह – अर्जुन प्रकाशन, 2010 7. गांधी दर्शन - डॉ. धीरेन्द्र मोहन दत्त 8. गांधी दर्शन की भूमिका एवं भारतीय संस्कृति - डॉ. श्रीपाल शास्त्री 9. सत्य के प्रयोग - एम. के. गांधी 10. Gandhi and Humanities - डॉ. हेराल्ड थोमकीन 11. गांधी, गीता एवं जैन धर्म - प्रो. सागरमल जैन 12. अहिंसा की बोलती मीनारें - राष्ट्रसन्त गणेशमुनि शास्त्री 13. शिक्षा विज्ञान - राष्ट्रसन्त गणेशमुनि शास्त्री 14. जैन धर्म - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 15. जैन धर्म, दर्शन - डॉ. रमेश चन्द्र जैन, 16.

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8006T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	कथा साहित्य एवं प्राकृत व्याकरण
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत कथा साहित्य अतिसमृद्ध है। प्राकृत में लगभग चौथी-पाँचवीं शताब्दी से कथाएँ लिखी जाती रहीं। समराइच्चकहा प्राकृतकथा साहित्य का एक प्रमुख ग्रन्थ हैं जिसका भाषात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। इसके साथ ही प्राकृत कथा एवं चरित विधाओं के बारे में अध्ययन करेंगे। इस्ससे विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में प्राकृत साहित्य की विविध विधाओं की समझ विकसित होगी। 2. कथाओं के अध्ययन से विद्यार्थियों की रूचि जागृत होगी। 3. समराइच्च कहा के माध्यम से जीवन जीने की कला की समझ होगी। 4. विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम	
इकाई एक	समराइच्चकहा (प्रथम भव) सम्पादक- डॉ. रमेशचन्द्र जैन साहित्य भण्डार, मेरठ
इकाई दो	पठित ग्रन्थ का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन
इकाई तीन	प्राकृत कथा साहित्य की समीक्षा
इकाई चार	प्राकृत चरित साहित्य की समीक्षा
इकाई पांच	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ. के.सी.सोगानी) के पाठ 42 से 84 का अभ्यास, किन्हीं आठ वाक्यों का हिन्दी से प्राकृत में अनुवाद पूछना
इकाई एक	समराइच्चकहा (प्रथम भव) सम्पादक- डॉ. रमेशचन्द्र जैन साहित्य भण्डार, मेरठ
सहायक पुस्तकें	1. समराइच्चकहा का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. झिनकू यादव 2. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक अनुशीलन - डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री 3. आचार्य हरिभद्रसूरि का जैन दर्शन में योगदान - डॉ. दर्शनप्रभा 4. प्राकृत का जैन कथा साहित्य - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 5. वृहत्कथाकोश - डॉ. ए.एन.उपाध्ये (भूमिका) 6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री 7. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा - डॉ. तारा डागा 8. प्राकृत स्वयं शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन 9. प्राकृत रचना सौरभ - डॉ. के.सी.सोगानी 10. बाल रूप प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदय चन्द्र जैन

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8007T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II
पाठ्यक्रम का नाम	सट्टक साहित्य एवं मागधी सूत्र
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृतसाहित्य में सट्टकों का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्पूरमंजरी प्राकृत सहित्य की सट्टक विधा का एक प्रमुख ग्रन्थ है, जिसका भाषात्मक अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। इसके साथ ही प्राकृत के विविध रूपों मागधी एवं शौरसैनी की विशेषताओं के बारे में अध्ययन करेंगे एवं प्राकृत व्याकरण का अध्ययन भी इस पत्र के द्वारा किया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1) सट्टक के अध्ययन से विद्यार्थियों में साहित्यिक रूचि जागृत होगी। 2) कर्पूरमंजरी के अध्ययन से साहित्य की सौन्दर्यानुभूति प्रकट होगी। 3) विद्यार्थियों में प्राकृत व्याकरण की समझ विकसित होगी। 4) विद्यार्थियों को प्राकृत साहित्य विविध विधाओं के अध्ययन से प्राकृत साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम	
इकाई एक	कर्पूरमंजरी राजशेखर (2, 3 एवं 4 जवनिका गद्य एवं पद्य) सम्पा. डॉ. रामप्रकाश पोद्दार, वैशाली, 1974
इकाई दो	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र-चित्रण
इकाई तीन	सट्टक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन
इकाई चार	हेमशब्दानुशासन के चतुर्थपाद के सूत्र नं. 287-302 (प्राकृत प्रवेशिका के मागधी सूत्र) आठ सूत्रों को देकर चार सूत्रों के सोदाहरण अर्थ पूछना आवश्यक है।
इकाई पांच	मागधी प्राकृत एवं शौरसेनी प्राकृत की प्रमुख विशेषतायें
इकाई एक	कर्पूरमंजरी राजशेखर (2, 3 एवं 4 जवनिका गद्य एवं पद्य) सम्पा. डॉ. रामप्रकाश पोद्दार, वैशाली, 1974
इकाई दो	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र-चित्रण
सहायक पुस्तकें	1. कर्पूरमंजरी, स्टेनकीनो (भूमिका) 2. आचार्य राजेशखर - डॉ. श्यामवर्मा 3. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र 4. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री 5. प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदयचन्द्र जैन 6. प्राकृत प्रवेशिका - डॉ. कोमल चंद जैन 7. सिद्धहेमशब्दानुशासन (प्राकृत व्याकरण की हिन्दी व्याख्या सहित) - श्री प्यारचन्द जी महाराज

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8008T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III
पाठ्यक्रम का नाम	अर्धमागधी प्राकृत एवं अपभ्रंश कवि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राकृत आगम साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। आगमों के अंतर्गत उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को शिक्षा एवं विनम्रता का ज्ञान होगा। अर्धमागधी आगमों में प्रयुक्त भाषा को जानेंगे। भाषा के अध्ययन के लिए प्राकृत व्याकरण के संज्ञा, क्रिया और कृदन्त का अध्ययन भी इस पत्र में करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन से शिक्षा एवं विनम्रता जैसे मूल्यों की समझ विकसित होगी। 2. अर्धमागधी आगमों में प्रयुक्त भाषा का ज्ञान होगा। अर्धमागधी प्राकृत के रूपगठन के लिए संज्ञा, क्रिया और कृदंतों की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम	
इकाई एक -	उत्तराध्ययन सूत्र - नमिप्रवज्या (1 से 62 गाथाएँ)
इकाई दो -	उत्तराध्ययन सूत्र - विनय अध्ययन (1 से 20 गाथाएँ) केशी गौतम अध्ययन का मूल्यांकन
इकाई तीन -	अर्द्धमागधी साहित्य का सर्वेक्षण
इकाई चार -	अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा के संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण सहित विवेचन
इकाई पांच -	अपभ्रंश के प्रमुख कविः स्वयंभू, पुष्पदन्त, वीरकवि, धनपाल, रइधू आदि के योगदान एवं उनके ग्रन्थों पर सामान्य प्रश्न
सहायक पुस्तकें	1. उत्तराध्ययन - एक समीक्षात्मक अध्ययन - आचार्य तुलसी 2. उत्तराध्ययनसूत्र - तेरापंथ महासभा - कलकत्ता 3. उत्तराध्ययनसूत्रम् - शिवमुनि 4. उत्तराध्ययन - अनु. संपा. आचार्य सुभद्र मुनि 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री 6. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य का इतिहास: डॉ. एल.बी.राम अनन्त 7. भविसयत्तकथा एवं अन्य अपभ्रंश कथा काव्य - डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री 8. अपभ्रंश भाषा और साहित्य - डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन 9. रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन - डॉ. राजा राम जैन 10. प्राकृत काव्य सौरभ - डॉ. प्रेम सुमन जैन 11. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमी चन्द्र शास्त्री

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8009T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV
पाठ्यक्रम का नाम	महाराष्ट्री प्राकृत
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत काव्य साहित्य के महत्त्व को जानने के लिए आख्यानमणि कोष एवं गउडवहो जैसे अद्वितीय काव्यों का इस पत्र में अध्ययन किया जायेगा। प्राकृत भाषा का एक महत्वपूर्ण भेद महाराष्ट्री प्राकृत है। इस भाषा की विशेषताओं का ज्ञान होगा तथा महाराष्ट्री प्राकृत की संरचना के लिए संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और कृदंतों का भी अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों को महाराष्ट्री प्राकृत में रचित काव्यों का ज्ञान होगा। 2. प्राकृत महाकाव्य गउडवहो की जानकारी होगी। 3. आख्यानमणिकोश ग्रन्थ के अध्ययन से आख्यान सम्बन्धी समझ विकसित होगी। 4. महाराष्ट्री प्राकृत की संरचना के लिए संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और कृदंतों का भी ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम	
इकाई एक	आख्यानकमणिकोश (आम्रदेवसूरि वृत्ति) तीसरा अधिकार 15वीं कथा रोहिण्याख्यानकम् संदर्भ ग्रंथः रोहिणीकहा (गाथा 1 से 100 तक) सम्पा. डॉ. प्रेमसुमन जैन, साहित्य संस्थान, उदयपुर
इकाई दो	गउडवहो (वाक्पतिराज) स. एन.जी.सुरू सन्दर्भ पुस्तिकाः वाक्पतिराज की लोकानुभूति, गाथाएं 1-50 संकलन- डॉ. के.सी.सोगानी, जयपुर-1983
इकाई तीन	पठित ग्रन्थों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन
इकाई चार	महाराष्ट्री प्राकृत का परिचय एवं विशेषताएँ
इकाई पांच	महाराष्ट्री प्राकृत भाषा की व्याकरण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के नियम
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, २००२ ई. 2. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा - डॉ. तारा डागा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, २०१५ ई. 3. अभिनव प्राकृत व्याकरण - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, जैन विद्यापीठ, सागर, २०१७ ई. 4. जैन संस्कृति कोष भाग 1 से 3 - प्रो. भाग चन्द्र जैन, 5. प्राकृत व्याकरण - डॉ. उदय चन्द्र जैन, प्राकृत, आगम एवं अहिंसा शोध संसथान, उदयपुर, २००२ ई. 6.

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8010T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V
पाठ्यक्रम का नाम	जैनविद्या के वैशिष्ट्य के विविध आयाम
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धांत अनेकान्तवाद की उपयोगिता एवं जैनाचार पद्धति का अध्ययन करेगे। जैनदर्शन के सिद्धांतों का भारतीय दार्शनिक परंपरा के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करेंगे साथ ही जैन संस्कृति की प्राचीनता के विविध आयाम, जैन पर्व और उनकी महत्ता का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धांत अनेकान्तवाद की व्यावहारिकता और प्रयोगात्मकता की समझ विकसित होगी। 2. जैनाचार पद्धति का अध्ययन से मनुष्य के जीवन में नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान की जानकारी होगी। 3. जैनदर्शन के गुणस्थान, नय, निक्षेप आदि सिद्धांतों का भी ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम	
इकाई एक -	जैनविद्या के प्रमुख सिद्धान्त एवं दार्शनिक परम्परा - प्राचीनता एवं विविधता
इकाई दो -	जैन दर्शन में गुणस्थान, अनेकान्त की पृष्ठभूमि एवं सापेक्षवाद का तुलनात्मक अध्ययन, अनेकान्त एवं भाषा दर्शन, अनेकान्त की व्यवहार्यता।
इकाई तीन -	जैन दर्शन में नय एवं निक्षेप की तात्त्विक पृष्ठभूमि, वचनव्यापार का नियामक – स्याद्वाद : सिद्धान्त एवं स्वरूप, सप्तभंग तथा उसकी समसामयिकता का विश्लेषण
इकाई चार -	जैनाचार: श्रमणाचार का वैशिष्ट्य (महाव्रत, मूलगुण, समिति, ध्यान एवं तप) एवं श्रावकधर्म का वैशिष्ट्य (अणुव्रत दर्शन, प्रतिमाएँ, सप्तव्यसन-त्याग)
इकाई पांच -	जैन संस्कृति की प्राचीनता के विविध आयाम, जैन पर्वों की महत्ता
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन 2. जैन धर्म - आ. सुशील मुनि 3. जैन धर्म, दर्शन - डॉ. रमेश चन्द्र जैन 4. जैन धर्म - डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री 5. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो. प्रेम सुमन जैन 6. तत्त्वार्थसूत्र - पं. सुखलाल सिंघवी 7. जैन दर्शन - पं. महेन्द्र कुमार जैन 8. जैन दर्शन: मनन और मीमांसा - मुनि नथमल 9. जैन धर्म-दर्शन - डॉ. मोहन लाल मेहता 10. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8100T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI
पाठ्यक्रम का नाम	भारतीय संस्कृति, समाज एवं कला
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	जी.ई.सी. (Generic Elective Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय एवं बुद्धकालीन भारतीय परिस्थितियों का अध्ययन करेंगे। बौद्धदर्शन के सिद्धांतों - चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, ध्यान चतुष्टय, अनात्म अनीश्वरवाद, शील, समाधि एवं प्रज्ञा का अध्ययन करेंगे, साथ ही बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव, मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में बौद्ध के चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग, शील, समाधि एवं प्रज्ञा आदि की समझ विकसित होगी। 2. महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय एवं बुद्धकालीन परिस्थितियों का ज्ञान होगा। 3 .बौद्ध धर्म की मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम	
इकाई एक -	महावीर एवं बुद्धकालीन भारतीय परिस्थिति, महात्मा बुद्ध का जीवन-परिचय
इकाई दो -	रत्नत्रय, चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग, अणुव्रत संहिता
इकाई तीन -	अनेकांत, प्रतीत्यसमुत्पाद, ध्यान चतुष्टय, अनात्म अनीश्वरवाद, शील, समाधि एवं प्रज्ञा
इकाई चार -	जैन एवं बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव
इकाई पांच -	जैन एवं बौद्ध धर्म - मूर्ति एवं स्थापत्य कला
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती , मुजफ्फरनगर, २०१२ ई. 2. बौद्ध संस्कृति का इतिहास - प्रो.भाग चन्द्र जैन, आलोक प्रकाशन, नागपुर, २०१२ ई. 3. बौद्ध दर्शन - राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, नई दिल्ली, २०२२ई. 4. बौद्ध दर्शन - बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, २००२ ई. 5. बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन भाग 1-2, भरतसिंह उपाध्याय, 6. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन, राजस्थान संस्कृति संस्थान, २००४ ई. 7. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा एवं मन्दिर - वासुदेव उपाध्याय, विहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, १९७२ ई. 8. जैन कला एवं स्थापत्य, अमला नन्द घोष, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, १९७१ ई. भाग 1-3 9. जैन प्रतिमा विज्ञान, मारुति नंदन तिवारी, पार्श्वनाथ विद्या आश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, १९८१ ई

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर 2023 – 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT8101T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI
पाठ्यक्रम का नाम	जैन एवं बौद्ध वाङ्मय में भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिकता के सन्दर्भ
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	जी.ई.सी. (Generic Elective Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्तर 7 की उत्तीर्णता
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र में जैन एवं बौद्ध साहित्य में अंकित भारतीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक सन्दर्भों का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में जैन एवं बौद्ध साहित्य के आधार से भारतीय संस्कृति और ऐतिहासिक सन्दर्भों की समझ विकसित होगी। 2. जैन एवं बौद्ध की मूर्ति एवं स्थापत्य कला की महत्ता की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम	
इकाई एक -	महावीर एवं बुद्ध से पूर्व भारतीय संस्कृति
इकाई दो -	महावीर एवं बुद्धकालीन भारतीय संस्कृति
इकाई तीन -	जैन एवं बौद्ध ग्रंथों में ऐतिहासिक सन्दर्भ
इकाई चार -	जैन एवं बौद्ध मूर्ति एवं स्थापत्य कला में अंकित भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ
इकाई पांच -	जैन एवं बौद्ध धर्म - मूर्ति एवं स्थापत्य कला के ऐतिहासिक सन्दर्भ
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती , मुजफ्फरनगर, २०१२ ई. 2. बौद्ध संस्कृति का इतिहास - प्रो.भाग चन्द्र जैन, आलोक प्रकाशन, नागपुर, २०१२ ई. 3. बौद्ध दर्शन - राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, नई दिल्ली, २०२२ई. 4. बौद्ध दर्शन - बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, २००२ ई. 5. बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन भाग 1-2, भरतसिंह उपाध्याय, 6. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन, राजस्थान संस्कृति संस्थान, २००४ ई. 7. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा एवं मन्दिर - वासुदेव उपाध्याय, विहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, १९७२ ई. 8. जैन कला एवं स्थापत्य, अमला नन्द घोष, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, १९७१ ई. भाग 1-3 9. जैन प्रतिमा विज्ञान, मारुति नंदन तिवारी, पार्श्वनाथ विद्या आश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, १९८१ ई.